Question :- Discuss Psychoanalysis as a school of Psychology.

Or

Discuss the Contribution of Freud to the development of psychoanalysis

Ans :- मनोविश्लेषण का विकास 1911 में जर्मनी में हुआ। Freud के मनोविश्लेषण को विधिवत रूप से स्थापित किया। इसके विकास में कई दूसरे लोगों ने भी योगदान दिया उनमें Jung, Adler आदि भी महत्वपूर्ण है। लेकिन sex के सम्बन्ध में आपसी मतभेद के कारण Jung तथा Adler ने Freud से अलग होकर अपने अपने सम्प्रदायों को स्थापित किया। 1911 से लेकर 1930 तक के मनोविश्लेषण के अन्तर्गत Freud के कई तरह के आधार तत्वों तथा अभिधारणाओं को विकसित किया। 1980 के बाद मनोविश्लेषण में थोड़ा परिवर्तन लाया गया। और उसे अधिक व्यापक बनाने का प्रयास किया गया। इस प्रकार मनोविश्लेषण के विकास में Freud ने व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण योगदान दिया। हम यहाँ मनोविश्लेषण के आधार तत्वों तथा विशेषताओं की व्याख्या करते हुए Freud के योगदानों पर प्रकाश डाला।

(1) लैंगिक इच्छा (Libido) :-

मनोविश्लेषण का एक मुख्य आधार लैंगिक इच्छा या व्यक्ति है। Freud ने इसे ही व्यक्ति के व्यवहारों का मूल आधार माना। इसका संकेत Freud को Charcot से मिला। जो फ्रांस के एक मनोचिकित्सक थे। फिर Freud ने व्यापक रूप से अध्ययन करके काम इच्छा के

सिद्धान्त को प्रमाणित किया।

(2) अचेतन (Un-Conscious),

मनोविश्लेषण इस विश्वास पर आधारित है कि मन के तीन पहलू है। जिन्हें चेतन, अर्द्धचेतन तथा अचेतन कहते है। अचेतन के सम्बन्ध में Freud को JANET से संकेत मिला। वे फ्रांस के चिकित्सक थे। Freud ने अचेतन पर व्यापक रूप से अध्ययन किया। इसके महत्व तथा इसके अस्तित्व को प्रमाणित किया कि अचेतन सबसे बड़ा भाग है। और व्यक्ति के व्यवहारों पर उनका व्यवहार पर उनका प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है।

(3) गत्यात्मक शक्तियां Dynamic forces

मनोविश्लेषण इस विश्वास पर आधारित है कि मन मन का एक गत्यात्मक भाग है। जिसे ID, Ego, तथा Superego कहते है। ~~और सभी नैतिक~~ ID सुख के नियम पर कार्य करता है। और सभी नैतिक तथा अनैतिक इच्छाओं को सन्तुष्टी चाहता है। ठीक इसके विपरीत Super Ego नैतिकता के सिद्धान्त पर काम करता है। और केवल नैतिक कार्यों का ~~अनुम~~ अनुमति देता है। Ego व्यक्ति ~~वास्तविकता~~ वास्तविकता के नियम के अनुकूल काम करता है। और ऐसे नैतिक या अनैतिक कार्यों को करने कि अनुमति देता है जो परिस्थिति के अनुकूल होते है। ID तथा Super Ego के विरोध स्वरूप कारण मानसिक संघर्ष उत्पन्न होते है। Ego इन संघर्षों का समाधान करता है।

Scanned with CamScanner

(4) **मनोलैंगिक विकास** - Psychosexual development.

Freud ने व्यक्तित्व के विकास की पाँच अवस्थाओं का उल्लेख क्रमशः मौखिक अवस्था, गुदा अवस्था, यौन अवस्था, अव्यक्त अवस्था तथा जननेन्द्रिय अवस्था का उल्लेख किया है। मौखिक अवस्था में बच्चे प्रधानतः अचेतन होते हैं। और ID की प्रधानता होती है। गुदा अवस्था में बच्चों में चेतन मन तथा Ego का विकास शुरू हो जाता है। यौन प्रधान अवस्था में बच्चों में चेतन मन तथा Ego का विकास काफी तेज बन जाता है। अव्यक्त अवस्था में Super Ego का विकास होता है। जननेन्द्रिय अवस्था में व्यक्तित्व का विकास पूर्ण हो जाता है।

(5) **दैनिक जीवन की भूलें** - Psychopathology of every day life

Freud का एक योगदान यह है, कि उन्होंने सर्वप्रथम प्रमाणित किया कि दैनिक जीवन की भूलें सार्थक तथा कारण युक्त होती हैं। उन्होंने प्रमाणित किया कि लिखने की भूलें, बोलने की भूलें, छापने कि भूलें, वस्तुओं को उचित जगह पर रखने की भूलें। तथा दुर्घटना के माध्यम से व्यक्ति अपनी अचेतन इच्छाओं की सन्तुष्टि करता है। इस सम्बन्ध में इनका Psychic determinis की धारणा महत्वपूर्ण है।

(6) **स्वप्न - Dream** :- मनोविश्लेषण इस विश्वास पर आधारित है कि स्वप्नों के माध्यम से अचेतन इच्छाओं की सन्तुष्टि होती है।

Scanned with CamScanner

निद्रा की अवस्था में प्रतिबन्धक का नियन्त्रण कमजोर पड़ जाता है। इसलिये स्वप्न में दमित अनैतिक तथा असामाजिक इच्छाओं को सन्तुष्ट होने का अवसर मिलता है। इस सिद्धान्त को इच्छापूर्ति कहा जाता है। यह सिद्धान्त आज भी स्वप्न के क्षेत्र में प्रसिद्ध है।

(7) मूल प्रवृतियाँ (Instincts) -

Freud के दो तरह के मूल प्रवृतियाँ है। जिन्हे रचनात्मक मूल प्रवृति और दूसरा ध्वसात्मक मूल प्रवृति कहते है। रचनात्मक मूल प्रवृति जो सभी तरह के रचनात्मक कार्यों का आधार है। ध्वसात्मक मूल प्रवृति को मृत्यु मूल प्रवृति कहते है। जो सभी तरह के विनाशात्मक कार्य करती है। जीवन को सन्तुलीत होना इन दोनो मूल प्रवृतियों पर निर्भर करता है।

(8) मानसिक विकृतियाँ (Mental disorder)

Freud ने दो तरह के मानसिक विकृतियों का उल्लेख किया है। जिन्हे मनः स्नायु विकृति तथा मनो-विकृति कहते है। उन्माद, बाध्यता, चिन्ता खिन्नता आदि मनः स्नायु विकृतियाँ है। मनोविदिलता, स्थिर व्यामोह, उन्माद विषाद आदि मनोविकृतियाँ है। इन सब का आधार अचेतन है।

(9) मनः चिकित्सा - (Psychopathology of every day life)

Freud ने मनोचिकित्सा के क्षेत्र में जो योगदान दिया है। इन्होने कहा है, कि Ego की कमजोरी के

कारण मानसिक रोग होता है। इसलिये इसके उपचार के लिये आवश्यक है, कि Ego को यथा यथासम्भव सबल बनाया जाय।

इस स्पष्ट होता है, कि मनोविश्लेषण के विकास में Freud का महत्वपूर्ण योगदान है। यह स्पष्ट हुआ कि - मनोविश्लेषण हेतु आधार रूप अनेक अभिधारणायें है। आज भी परिमार्जित रूप में सभी अभिधारणायें Freud के उपलब्धि के रूप में सुरक्षित है।

Singh